

पाठ-3 टार्च बेचने वाले

विधा – व्यंग्य विधा

रचनाकार – (सुप्रसिद्ध व्यंग्य लेखक) हरिशंकर परसाई (जन्म-1922-मृत्यु-1995)
जमानी गाँव 'वसुधा' पत्रिका का सम्पादन कार्य ।

प्रमुख रचनाएँ :

कहानी संग्रह – 'हँसते हैं रोते हैं', 'जैसे उनके दिन फिरे' ।

उपन्यास – 'रानी नागफनी की कहानी', 'तट की खोज' ।

निबन्ध-संग्रह – 'भूत के पाँव पीछे', 'पगड़ियों का जमाना', 'सदाचार का ताबीज',
'शिकायत मुझे भी है', 'और अंत में'

व्यंग्य लेख-संग्रह – 'वैष्णव की फिसलन', 'तिरछी रेखायें', 'ठिठुरता हुआ गणतन्त्र',
'विकलांग श्रद्धा का दौर'

भाषा-शैलीगत विशेषतायें –

1. सरल और सुबोध भाषा-शैली
2. तत्सम शब्दों का सटीक प्रयोग
3. मुहावरों का प्रयोग
4. भाषा शैली-व्यंग्यपूर्ण, संवादात्मक, उपदेशात्मक ।

पाठ-परिचय : एक व्यंग्यरचना 'टार्च बेचने वाले' में परसाई जी ने टार्च बेचने वाले दो मित्रों के माध्यम से समाज में घटित अंध-विश्वास, रूढ़ियों पर कुठाराघात करने के लिए अपने सशक्त हास्य और व्यंग्य के माध्यम से समाज पर तीव्र प्रहार किया है। दो मित्रों में से एक टार्च बेचते-बेचते प्रवचनकर्ता बन जाता है तो दूसरा संतों की वेशभूषा में भोलीजनता की आत्मा के अँधेरे को दूर करने की बात करता है। आत्मा के उजाले के लिए लोगों को संसार का घना अंधेरा दिखाकर भय पैदा कर देता है। इस रचना के माध्यम से समाज में व्याप्त अंधविश्वास तथा तथाकथित धर्माचार्यों पर कड़ा प्रहार किया है।

स्मरणीय बिन्दु – लेखक बहुत दिनों बाद एक दाढ़ी बढ़ाये लम्बा कुर्ता पहने हुए उस व्यक्ति से मिला जो पहले चौराहे पर 'सूरजछाप' टार्च बेचा करता था। बदली हुई वेशभूषा का कारण पूछने पर उसने बताया कि जीवन में कुछ ऐसा घटित हुआ कि उसने टार्च बेचने का काम छोड़ दिया।

इसके बाद वह लेखक को उस घटना के विषय में बताता है। पाँच साल पहले वह और उसका दोस्त निराश बैठे थे। उनके सामने एक प्रश्न था— 'पैसा कैसे पैदा करें?' इस सवाल के हल के लिए अपनी किस्मत आजमाने के लिए अलग-अलग दिशाओं में दोनों मित्र निकल पड़े। इस वादे के साथ कि पाँच वर्ष बाद इसी स्थान पर फिर मिलते हैं।

इन पाँच वर्षों के दौरान पहला मित्र टार्च बेचने का धंधा करने लगा। वह चौराहे पर या मैदान में लोगों को इकट्ठा कर लेता तथा अंधेरे का डर बढ़े ही नाटकीय अंदाज से दिखाता कि उसकी सारी टार्च हाथों हाथ बिक जाती। उसका धंधा खूब चल निकला।

वायदे के मुताबिक पाँच साल बाद वह निश्चित स्थान पर पहुँचता है परन्तु मित्र वहाँ नहीं मिलता। वह उसे ढूँढ़ने निकल पड़ता है। एक शाम उसे एक मैदान में मंच पर सुन्दर रेशमी वस्त्रों से सजे एक भव्य पुरुष बैठे दिखाई दिये। हजारों लोग श्रद्धा से झुके गुरु गम्भीर वाणी को तन्मय होकर सुन रहे हैं। वह व्यक्ति प्रवचन दे रहा था— मैं आज मनुष्य को घने अंधकार में देख रहा हूँ, आज आत्मा में भी अन्धकार है। मनुष्य की आत्मा भय, पीड़ा से त्रस्त है। आज मनुष्य इस अन्धकार से घबरा उठा है। डरो मत, जहाँ अन्धकार है, वहीं प्रकाश है, प्रकाश को बाहर नहीं, अन्दर में खोजो। इस प्रकार वह लोगों को पहले डराते हैं फिर तुरन्त उन्हें अपने साधना-मन्दिर में बुलाकर अन्तः ज्योति जलाने का आह्वान करते हैं। लोग तन्मय होकर सन्त की बातें सुन रहे थे पर उसकी हँसी छूट रही थी।

तभी उसने देखा कि भव्य-पुरुष मंच से उतर कर कार पर बैठने जा रहा है। उसने तो उस भव्य पुरुष को नहीं पहचाना पर भव्य पुरुष ने उसे पहचान कर कार में बिठा लिया सन्त की वेशभूषा में यह उसका मित्र ही था। बंगले के वैभव को देखकर वह हैरान हो गया। फिर दोनों मित्रों में खुलकर बात-चीत हुई।

उसने सन्त बने अपने मित्र से पूछा कि उसने इतनी दौलत कैसे पाई, क्या वह भी टार्च बेचता है। फिर वह कहता है कि उन दोनों के प्रवचन एक जैसे ही हैं, वह भी लोगों को अंधेरे का डर दिखाकर टार्च बेचता है। तथा सन्त बना मित्र भी लोगों को डर दिखाकर टार्च बेचता है। दोनों लोगों के जीवन में प्रकाश लाने का वादा करते हैं पर दूसरे मित्र की टार्च किसी कम्पनी की बनाई हुई नहीं है। वह बहुत सूक्ष्म है मगर उसकी कीमत बहुत अधिक मिल जाती है। मित्र को सारा रहस्य समझ में आ गया।

पहला मित्र सन्त के साथ दो दिन तक रहा। अब उसने निर्णय लिया कि नया धंधा शुरू करूँगा। वह 'सूरज छाप' टार्च की पेटी नदी में फेंक देता है। दाढ़ी बढ़ाकर लम्बा कुरता पहन लेता है। वह लेखक को बताता है कि पहले वह लोगों को बाहरी अन्धकार से डराता है, फिर लोगों को आत्मा में प्रकाश फैलाने की बात कहकर उन्हें आसानी से ठग सकेगा। इस प्रकार दोनों मित्र इस ठगी के धन्धे में अंधेरे को दूर करने की बात करते हैं। बस फर्क सिर्फ बाहर के अंधेरे और अंदर के अंधेरे का ही है।

व्याख्या :-

“मगर यह बताओ.....भीतर आत्मा में कैसे घुसा।

प्रसंग —प्रस्तुत गद्यांश प्रसिद्ध ‘व्यंगकार हरिशंकर परसाई’ द्वारा रचित व्यंग्य-लेख ‘टॉर्च बेचने वाले’ से अवतरित है। इसमें लेखक ने टॉर्च बेचने वाले दो मित्रों के माध्यम से बताया है कि किस प्रकार अपने-अपने तरीके से वो दोनों भोली-भाली जनता को बेवकूफ बनाते हैं।

व्याख्या— जब लेखक उस व्यक्ति को नये रूप में देखता है तो वह उसके रूप परिवर्तन पर अनेक आशंकायें जताते हुए प्रश्न करता है। लेखक उससे दाढ़ी रखने और लम्बा कुरता पहनने का कारण जानना चाहता है। उसे लगता है कि कहीं उसे उसकी बीबी ने तो नहीं त्याग दिया। या यह भी हो सकता है कि उसे उधार मिलना बन्द हो गया हो। उसे साहूकार कर्ज चुकाने के लिये तंग करते हो या किसी चोरी के मामले में फँस गया हो। ये सभी कारण व्यक्ति को साधु-सन्यासी का रूप धारण करने को मजबूर करते हैं। वह टार्च बेचकर लोगों के जीवन में प्रकाश भरने का दावा करता है। अब वह यह जानना चाहता है कि आखिर बाहर का टार्च भीतर उसकी आत्मा में कैसे घुस गया क्योंकि अब वह आत्मा के प्रकाश की बातें करने लगता है।

व्यंग्यार्थ यह है कि बाहरी आदमी दुनिया के प्रपंचों से तंग आकर आन्तरिक ज्ञान और प्रकाश की बातें करने लगता है।

विशेष :-

1. व्यंग्यात्मक भाषा-शैली का प्रयोग
2. तत्सम शब्दों का प्रयोग
3. प्रश्नात्मक शैली अपनाई गई।
4. संवाद शैली, रोचकता।

महत्वपूर्ण प्रश्न-उत्तर :-

1. भव्य पुरुष ने कहा-“जहाँ अंधकार है, वहीं प्रकाश है” इसका क्या तात्पर्य है?”

उत्तर— इसका तात्पर्य है कि अँधेरे को चीरने के लिए प्रकाश की आवश्यकता होती है। अँधेरे और प्रकाश का गहरा सम्बन्ध है। अँधेरे से ही प्रकाश निकलता है, तभी अन्धकार मिटता है। भव्य-पुरुष हृदय के अन्धकार की बात कर रहा है। इसी हृदय से प्रकाश की किरणें फूटती हैं। अन्धकार में प्रकाश की किरणें होती हैं तो प्रकाश में अन्धकार की थोड़ी कालिमा भी होती है। प्रकाश को अन्तर में खोजना ही पड़ता है।

2. भीतर के अँधेरे की टार्च बेचने और ‘सूरज-छाप’ टार्च बेचने के धंधे में क्या फर्क है?

उत्तर— इस पाठ में दो प्रकार के अँधेरों का जिक्र है — बाहरी अँधेरा और भीतर हृदय का अँधेरा।

कुछ लोग साधु-सन्त का रूप धारण कर हृदय के अन्धकार को मिटाने का उपाय बताते हैं यही उपाय भीतर के अँधेरे की टार्च हैं और इसी प्रकार लोगों की भावनाओं का शोषण करते हैं। मात्र धन-प्राप्ति ही ऐसे लोगों का एक मात्र उद्देश्य होता है। 'सूरज-छाप टार्च' बेचने वाले बाहर के अँधेरे का डर दिखाकर लोगों को भयभीत करते हैं उनके सामने तरह-तरह की दुर्घटनाओं की आशंकाएँ जताते हैं फिर प्रकाश के नाम पर टार्च बेचते हैं।

3. आशय स्पष्ट कीजिए –

(क) आजकल सब जगह अँधेरा छाया रहता है रातें बेहद काली होती हैं। अपना ही हाथ नहीं सूझता।

उत्तर- टॉर्च बेचने वाला व्यक्ति लोगों का अँधेरे का भयावह चित्र खींचते हुए अपनी टॉर्च बेचना चाहता है। अंधकार में अपराध होते हैं। व्यक्ति को कुछ नहीं सूझता। अँधेरे का डर दिखाकर टॉर्च बेचकर लाभ कमाने की रणनीति कारगर है।

(ख) प्रकाश बाहर नहीं है उसे अंतर में खोजो। अंतर में बुझी उस ज्योति को जगाओ।

उत्तर- शरीर बाती है और मन ज्योति है। मनुष्य के भीतर आत्मप्रकाश नहीं रहा उसकी ज्योति बुझ गई है। ज्ञान रूपी प्रकाश द्वारा ही अज्ञान रूपी आत्मा के अंधकार को दूर किया जा सकता है। अंधकार को मिटाने का प्रकाश हृदय में ही समाया हुआ है। यहाँ संत बना व्यक्ति लोगों को धर्म के नाम पर भयभीत कर अपनी शरण में बुलाना चाहता है।

(ग) “धंधा वही करूँगा, यानि टार्च बेचूँगा। बस कम्पनी बदल रहा हूँ।

उत्तर- टॉर्च बेचने वाला कहता है कि धंधा वही करूँगा अर्थात् लोगों को ठगकर पैसा कमाऊँगा। धर्म का धंधा, टॉर्च बेचने के समान ही है। दोनों कंपनी अलग-अलग है, धर्म के ठेकेदार आस्था को बेचते हैं। इसमें कमाई और सम्मान ज्यादा है।

अभ्यास कार्य –

व्याख्या

1. मैंने कहा.....अन्धकार छाया है।
2. जहाँ अन्धकार है.....अपने भीतर जगाओ।
3. मैं आज.....पीड़ा से ग्रस्त हूँ।

विचारणीय प्रश्न—

1. लेखक ने ऐसा क्या कहा कि टार्च बेचने वाले को पीड़ा हुई?
2. पाँच साल बाद दोनों मित्रों की मुलाकात किन परिस्थितियों में हुई?
3. “व्यंग्य विधा सबसे धारधार हैं” परसाई जी की रचना के आधार पर अपने विचार स्पष्ट करो।
4. पैसा पैदा करने की लिप्सा में आज मनुष्य ने अध्यात्म को एक व्यापार बना दिया। स्पष्ट करो।
5. ‘टार्च बेचने वाले’ के रचना प्रयोजन और व्यंग्य को अपने शब्दों में लिखो।

योग्यता विस्तार

कक्षा में वाद—विवाद और परिचर्चा के विषय

1. पैसा पैदा करने की लिप्सा में अध्यात्मिकता भी एक व्यापार
2. समाज में फैले अंधविश्वास